Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN:2584-184X

Research Article

कोविड-19 के दौरान राजस्थान स्कूल शिक्षा विभाग के कार्यक्रमों का विद्यार्थियों के शैक्षिक अधिगम पर प्रभाव: बांसवाड़ा जिले के संदर्भ में

अशोक कुमार सागर

शोधार्थी, शिक्षा विभाग, गोविन्द गुरु जनजातीय विश्वविद्यालय, बांसवाड़ा, राजस्थान, भारत

Corresponding Author: * अशोक कुमार सागर

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.20461030

सारांश

यह अध्ययन कोविड-19 महामारी के दौरान राजस्थान स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा संचालित विभिन्न शैक्षिक कार्यक्रमों के विद्यार्थियों के शैक्षिक अधिगम पर पड़े प्रभाव का विश्लेषण करता है। बांसवाड़ा जिले के विशेष संदर्भ में ऑनलाइन शिक्षा, डिजिटल सामग्री, दूरदर्शन कक्षाओं, व्हाट्सएप आधारित शिक्षण तथा वैकल्पिक शिक्षण माध्यमों की प्रभावशीलता का अध्ययन किया गया है। शोध में यह जानने का प्रयास किया गया है कि इन कार्यक्रमों ने विद्यार्थियों की सीखने की क्षमता, शैक्षिक उपलब्धि, सहभागिता तथा अध्ययन निरंतरता को किस प्रकार प्रभावित किया। साथ ही ग्रामीण एवं जनजातीय क्षेत्रों में इंटरनेट, संसाधनों तथा तकनीकी सुविधाओं की उपलब्धता से जुड़ी चुनौतियों का भी मूल्यांकन किया गया है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2584-184X
- **Received:** 02-04-2026
- **Accepted:** 28-05-2026
- **Published:** 30-05-2026
- **MRR:**4(5); 2026: 357-365
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

अशोक कुमार सागर. कोविड-19 के दौरान राजस्थान स्कूल शिक्षा विभाग के कार्यक्रमों का विद्यार्थियों के शैक्षिक अधिगम पर प्रभाव: बांसवाड़ा जिले के संदर्भ में. Indian J Mod Res Rev. 2026;4(5):357-365.

Access this Article Online

www.mrrjournal.in

कुंजी शब्द: कोरोना महामारी, राजस्थान स्कूल शिक्षा, शैक्षिक कार्यक्रम, बांसवाड़ा, शिक्षार्थी।

© 2026 अशोक कुमार सागर. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

1. परिचय

21 वीं सदी की सबसे बड़ी समस्या के रूप में सामने आए कोरोना वायरस ने सम्पूर्ण विश्व को चिंतित कर दिया। दुनिया के विकासशील देशों के साथ-साथ विकसित देश भी इस गंभीर वायरस की चपेट में आ चुके हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने इस वायरस जनित रोग कोरोना वायरस को महामारी घोषित कर दिया है। यह वायरस बहुत ही सूक्ष्म है, लेकिन काफी ज्यादा प्रभावी है। इस वायरस का संबंध वायरस के ऐसे परिवार से है जिसके संक्रमण से जुकाम से लेकर सांस लेने में तकलीफ जैसी समस्या हो सकती है जो आगे चलकर एक विकराल रूप ले लेती है और रोगी के श्वसन तंत्र को बुरी तरह प्रभावित करती है।[1] यह बहुत ही खतरनाक वायरस है जिसका इलाज अभी तक खोजा नहीं जा सका है।

इस वायरस ने न केवल विश्व के विभिन्न देशों के लोगों के स्वास्थ्य पर प्रहार किया है। बल्कि, इसने किसी देश की रीढ़ समझे जाने वाली अर्थव्यवस्था, शिक्षा, रक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं को भी बुरी तरह प्रभावित किया है। जहां एक ओर, इससे नौकरियां और कारोबार प्रभावित हुए हैं। वहीं, दूसरी ओर, इसका असर सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था पर भी पड़ा है। स्कूलों के अनिश्चितकाल के लिए बंद होने का गहरा असर लड़कियों और वंचित असहाय छात्र वर्ग पर भी पड़ा है। विश्व की विभिन्न सरकारों द्वारा लॉकडाउन लगाने से सारे विद्यालय, कॉलेज और अन्य उच्च शिक्षा संस्थानों को बंद करना पड़ा है। ऐसे में इसका प्रत्यक्ष प्रभाव अध्यापकों और विद्यार्थियों के जीवन पर पड़ा है।[2]

कोविड-19 महामारी ने शिक्षा प्रणाली को वैश्विक स्तर पर अभूतपूर्व चुनौती दी है। यूनेस्को की एक रिपोर्ट के अनुसार, कोरोना महामारी से भारत में लगभग 32 करोड़ छात्रों की शिक्षा प्रभावित हुई है जिसमें 15.81 करोड़ लड़कियां और 15.25 करोड़ लड़के शामिल हैं। वैश्विक स्तर पर इस महामारी से 193 देशों के 157 करोड़ छात्रों की शिक्षा प्रभावित हुई है जो विभिन्न स्तरों पर दाखिला लेने वाले छात्रों का लगभग 92 प्रतिशत है।[3] विद्यालयों के बंद होने से शिक्षण-अधिगम की पारंपरिक पद्धतियाँ बाधित हुईं और शिक्षा विभागों को वैकल्पिक माध्यमों की तलाश करनी पड़ी है।

भारत में केन्द्र एवं राज्य सरकार के आदेशानुसार बच्चों की कक्षाएँ ऑनलाइन प्रारम्भ कर दी गयी। इस हेतु शिक्षा मंत्रालय द्वारा माध्यमिक एवं उच्चतर शिक्षा को ऑनलाइन पोर्टल पर उपलब्ध कराने हेतु किए गये विभिन्न प्रयास किए गए जिनमें दीक्षा पोर्टल, ई-पाठशाला, स्वयं पोर्टल, स्वयं प्रभा, राष्ट्रीय डिजिटल लाइब्रेरी, ई-पीजी पाठशाला आदि शामिल हैं। इन्हीं सफल प्रयासों का परिणामस्वरूप विद्यार्थियों के बीच ज्यादा शैक्षिक अंतराल नहीं हुआ और वह अपने अध्ययन में संलग्न रहे। इस शैक्षिक निरंतरता के कारण ही लॉकडाउन समाप्त होने के पश्चात विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय खुलने पर विद्यार्थियों को पुनः संपर्क कक्षाओं में जाने में ज्यादा दिक्कतों का सामना नहीं करना पड़ा।[4]

राजस्थान सरकार ने भी इस दिशा में प्रयास करते हुए विभिन्न ऑनलाइन शैक्षिक कार्यक्रम शुरू किए हैं जिनका प्रमुख उद्देश्य छात्रों की शिक्षा की निरंतरता बनाए रखना, डिजिटल और गैर-डिजिटल दोनों माध्यमों से शिक्षा उपलब्ध कराना और अभिभावकों और समुदाय को शिक्षा प्रक्रिया में सक्रिय रूप से जोड़ना था। इन कार्यक्रमों में स्माईल, शिक्षा वाणी कार्यक्रम, शिक्षा दर्शन, मोबाइल आधारित अनुप्रयोग, ई-कंटेंट विकास, घर से शिक्षा अभियान, शिक्षा सेतु एप, दीक्षा-राइज़, शाला दर्पण, शाला संवाद, शाला संबलन ऐप आदि शामिल है।[5] कोविड-19 के दौरान सरकार एवं शिक्षा मंत्रालय एवं शिक्षण संस्थाओं द्वारा जो प्रयास किया गया उसका बहुत अधिक सकारात्मक परिणाम सामने आया है।

2. शोध का स्वरूप

यह अध्ययन कोविड-19 महामारी की पृष्ठभूमि में राजस्थान शिक्षा विभाग द्वारा लागू विभिन्न शैक्षिक कार्यक्रमों के विद्यार्थियों के अधिगम वातावरण, शैक्षिक रुचि तथा स्मृति स्तर पर पड़ने वाले प्रभावों की पड़ताल हेतु किया गया है। प्रस्तुत शोध कार्य वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक दोनों प्रकृति का है। इसके वर्णनात्मक पहलू के अंतर्गत कोविड-19 के समय राजस्थान के शिक्षा विभाग द्वारा लागू किए गए शैक्षिक कार्यक्रमों की प्रकृति, कार्यप्रणाली और उनकी पहुँच का वर्णन किया गया है और विश्लेषणात्मक पहलू के अंतर्गत इन कार्यक्रमों के प्रभावों का बांसवाड़ा जिले के संदर्भ में तुलनात्मक और सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया है।

3. अध्ययन क्षेत्र और न्यादर्श

प्रस्तुत शोध के अंतर्गत आंकड़ों का संकलन बांसवाड़ा जिले के चयनित दस माध्यमिक विद्यालयों में कक्षा 9 वीं और 10 वीं में अध्ययनरत विद्यार्थियों को शामिल किया गया है। इसमें छात्र और छात्राओं के अनुपात को समान रखा गया है। प्रत्येक विद्यालय से 60 विद्यार्थियों (30 छात्र और 30 छात्रा) का चयन किया गया है। इस प्रकार कुल 600 विद्यार्थियों का चयन इस शोध कार्य के लिए किया गया है।

---

[1] वायरस टेक्सोनॉमी 2018, बी रिलीज इंटरनेशनल कमेटी ऑन टेक्सोनॉमी ऑफ वायरस, आईसीटीवी, मार्च, 2019; अभिगमन तिथि जनवरी, 2020, पृ.07.

[2] शर्मा, पुनीत कृष्ण और जैन, सतीश कुमार. (2020). कोरोना- महामारी का छात्रों की मनः स्थिति पर प्रभाव. रिसर्च रिइंफोर्स्मेंट, 8 (1), मई-अक्टू, पृ-63-68.

[3] यूनेस्को रिपोर्ट, 2020 .

[4] गोस्वामी, पूजा और सिंह, सुषमा. (2022). कोरोना वायरस महामारी का शिक्षा पर सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स, 10 (02), फरवरी, पृ.500-504.

[5] राजगोपाल, शोभित और गुप्ता, मुक्ता. (2021). राजस्थान के सरकारी स्कूलों में डिजिटल अधिगम. अजीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी लर्निंग कर्व, अगस्त, पृ.98-101.

© 2026 अशोक कुमार सागर. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

तालिका-1: बांसवाड़ा जिले के चयनित दस उच्च माध्यमिक विद्यालयों की सूची

क्र. सं.	एनआईसी कोड	विद्यालय का नाम
शहरी		
1.	223864	राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, नगर, बांसवाड़ा
2.	223865	राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, कंधारवाडी, बांसवाड़ा
3.	223868	राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, पृथ्वीगंज, बांसवाड़ा
4.	223870	राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, नूतन, बांसवाड़ा
5.	501785	महात्मा गांधी राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, हाऊसिंग बोर्ड, बांसवाड़ा
ग्रामीण		
6.	223844	राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, कडेलिया
7.	223856	राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, बोरिया
8.	223858	राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, वीरपुर
9.	223859	महात्मा गांधी राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, आम्बापुरा
10.	226772	राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, डोरियारेल

स्रोत: राज. शाला दर्पण, राजस्थान सरकार

छात्रों की जनसांख्यिकीय प्रोफ़ाइल:

बांसवाड़ा जिले के सार्वजनिक क्षेत्र के स्कूलों से कुल चयनित 600 छात्र-छात्राओं के नमूने में से 300 छात्र और छात्राएं 9 वीं कक्षा से और 300 छात्र और छात्राएं 10 वीं कक्षा से संबंधित हैं। इनमें छात्र और छात्रों का एक समान अनुपात (50:50) है। अर्थात 300 (50%) छात्र पुरुष थे और 300 (50%) छात्र महिलाएँ थीं। कुल नमूने में 300 (50%) छात्र ग्रामीण क्षेत्रों से हैं और 300 (50%) शहरी क्षेत्रों से हैं।

तालिका-2: कोविड-19 के दौरान बांसवाड़ा जिले की स्कूली शिक्षा में ई-लर्निंग पहल के प्रति उच्च माध्यमिक छात्र-छात्राओं की धारणाएँ

क्र. सं.	कथन	हाँ (%)	नहीं (%)	पता नहीं (%)
1.	मैंने COVID-19 के दौरान "SMILE (सोशल मीडिया इंटरफ़ेस फॉर लर्निंग एंगेजमेंट)" के माध्यम से अपनी शिक्षा/अध्ययन जारी रखा।	97.5	2.5	0.0
2.	मुझे हर दिन संबंधित विषय के शिक्षकों से व्हाट्सएप चैनलों पर वीडियो के विभिन्न लिंक मिलते थे।	94.5	5	0.5
3.	मैं सभी विषयों के सभी संबंधित वीडियो (YouTube के माध्यम से खोले गए) तक आसानी से नहीं पहुँच पा रहा था।	49	49.5	1.5
4.	मैंने SMILE (हवामहल) के शनिवार के कार्यक्रम का पूरा आनंद लिया, जो कहानियों और खेलों से भरपूर था।	55	44.5	0.5
5.	मैंने SMILE व्हाट्सएप ग्रुप में कभी कोई प्रश्न या संदेह नहीं पूछा।	41.6	57.9	0.5
6.	मुझे पूरी तरह से पता था कि 'शिक्षादर्शन' एक टेलीविजन आधारित कार्यक्रम था।	60.4	39.1	0.5
7.	मुझे अच्छी तरह पता है कि 'शिक्षावाणी' कार्यक्रम रेडियो के माध्यम से प्रसारित किया गया था।	57.4	40.6	2.0
8.	मैंने शिक्षा विभाग द्वारा विकसित ई-कक्षा ऐप का उपयोग किया।	77.2	22.3	0.5
9.	मुझे पता है कि डिजिटल ऐप में विषयवार वीडियो और प्रश्न बैंक शामिल हैं।	75.7	21.3	3.0
10.	मैंने 'शिक्षादर्शन' नामक पहल शैक्षिक टीवी कार्यक्रम में भाग लिया था।	27.7	71.8	0.5
11.	मैंने "शिक्षावाणी"- रेडियो के माध्यम से शिक्षा पहल में भाग लिया था।	26.7	72.8	0.5
12.	मैंने "हवामहल - आनंदमय शनिवार" कार्यक्रम में भाग लिया था।	51.0	47.0	2.0
13.	मैंने "यूट्यूब के माध्यम से करियर मार्गदर्शन पर" (राजीव गांधी करियर पोर्टल) के सभी लाइव सत्रों में भाग लिया था।	71.8	27.2	1.0
14.	मेरे पास स्मार्टफोन नहीं है, इसलिए मैं ऑनलाइन कक्षाओं में शामिल नहीं हो सका।	10.9	88.6	0.5
15.	मैंने अपने सहपाठियों के साथ अपनी शंकाओं पर चर्चा की थी।	71.8	26.7	1.5
16.	मुझे ऑनलाइन सीखने के दौरान नेटवर्क की समस्या का सामना करना पड़ा था।	89.1	9.9	1.0
17.	मेरे पास ऑनलाइन सीखने के लिए पर्याप्त मोबाइल डेटा नहीं था।	82.2	16.8	1.0
18.	मेरे शिक्षक मेरे संदेह पूछने पर भी तुरंत जवाब नहीं दे रहे थे।	57.9	39.6	2.5
19.	मुझे लिंक के माध्यम से प्रदान की गई सामग्री में जटिल भाषा संबंधी समस्या का सामना करना पड़ा था।	77.7	19.8	2.5
20	मैंने एक अन्य ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म का भी उपयोग किया था जो मुफ़्त में उपलब्ध था।	78.7	20.8	0.5
21.	मुझे लगता है कि आमने-सामने पढ़ाने का तरीका ऑनलाइन पढ़ाने से बेहतर है।	95	4.5	0.5
22.	मुझे लगता है कि ऑनलाइन कक्षाओं के दौरान बातचीत की कमी है।	94.6	4.4	1.0
23.	मुझे लगता है कि ऑफ़लाइन कक्षाएं ऑनलाइन कक्षाओं की तुलना में अधिक प्रभावी हैं।	92.6	5.9	1.5
24.	ई-लर्निंग मुझे पारंपरिक कक्षा जैसा ही सीखने का अनुभव देता है।	24.3	74.3	1.5
25.	मुझे SMILE कार्यक्रम के तहत मेरे शिक्षकों द्वारा शुरुआत से ही व्हाट्सएप ग्रुप में जोड़ा गया था।	91.6	6.9	1.5
26.	मेरे सभी सहपाठियों को SMILE व्हाट्सएप ग्रुप में जोड़ा गया था।	84.2	8.9	6.9
27.	मुझे SMILE व्हाट्सएप ग्रुप के माध्यम से दैनिक लिंक मिल रहा था।	92.1	6.4	1.5
28.	मैंने अपने संदेहों को दूर करने के लिए अपने शिक्षक को फोन किया था।	74.3	24.3	1.5
29.	मेरे शिक्षक ने दैनिक लिंक भेजने के अलावा ऑनलाइन कक्षाएं भी ली थीं।	66.3	31.7	2.0
30.	मुझे इन कक्षाओं के माध्यम से कभी कोई गृहकार्य नहीं मिला।	12.9	85.1	2.0
31.	मेरे शिक्षक द्वारा मेरे गृहकार्य की दैनिक/वैकल्पिक आधार पर जाँच की जाती थी।	81.2	17.8	1.0

© 2026 अशोक कुमार सागर. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

32.	मुझे गृहकार्य के बारे में दैनिक आधार पर प्रतिक्रिया मिलती थी।	74.8	24.3	1.0
33.	मैंने अपनी पढ़ाई के लिए गूगल जैसे अन्य स्रोतों से मदद ली थी।	92.1	7.4	0.5

स्रोत: शोध सर्वे

तालिका-1 से ज्ञात होता है कि 97% छात्र "SMILE (लर्निंग एंगेजमेंट के लिए सोशल मीडिया इंटरफ़ेस)" के माध्यम से अपनी शिक्षा जारी रखने में सक्षम थे, लेकिन 3% छात्र COVID-19 के दौरान इसे जारी नहीं रख पाए। इसके अलावा, 94% छात्रों ने देखा कि उन्हें संबंधित विषय के शिक्षकों से व्हाट्सएप चैनलों पर वीडियो के विभिन्न लिंक मिले, लेकिन 5% छात्रों ने इससे इनकार किया। इसके बाद, 49% छात्रों ने बताया कि वे सभी विषयों के सभी संबंधित वीडियो (YouTube के माध्यम से खोले गए) तक नहीं पहुँच पाए, जबकि 49% छात्रों ने माना कि वे इन्हें आसानी से एक्सेस कर पा रहे थे।

यह देखा गया कि 55% छात्रों ने माना कि उन्होंने SMILE (हवामहल) के शनिवार के कार्यक्रम का पूरा आनंद लिया, जो कहानियों और खेलों से भरपूर था, जबकि 44% छात्रों ने महसूस किया कि उन्हें इसमें मज़ा नहीं आया। अनुवर्ती कार्रवाई के रूप में, 42% छात्रों ने बताया कि उन्होंने SMILE व्हाट्सएप ग्रुप में कभी कोई प्रश्न नहीं उठाया, जैसे कोई संदेह पूछना, लेकिन 58% छात्रों ने प्रश्न पूछे थे। SMILE/व्हाट्सएप ग्रुप में। 60% छात्रों ने पुष्टि की कि उन्हें पूरी जानकारी थी कि शिक्षादर्शन एक टेलीविजन-आधारित कार्यक्रम है, और 39% छात्रों को इसकी पूरी जानकारी नहीं थी।

इसके अलावा, यह देखा गया कि 57% छात्र रेडियो के माध्यम से प्रसारित होने वाले शिक्षावाणी कार्यक्रम के बारे में अच्छी तरह जानते थे, और 41% छात्र इसके बारे में अच्छी तरह से नहीं जानते थे। 77% छात्रों ने शिक्षा विभाग द्वारा विकसित ई-कक्षा ऐप का इस्तेमाल किया, और 22% छात्रों ने इसका इस्तेमाल नहीं किया। 76% छात्रों ने स्वीकार किया कि वे जानते हैं कि डिजिटल ऐप में विषयवार वीडियो और प्रश्न बैंक शामिल हैं, और 21% छात्रों को इसके लिए कोई पुरस्कार नहीं मिला। केवल 28% छात्रों ने शिक्षादर्शन नामक शैक्षिक टीवी कार्यक्रम में भाग लिया था, और 72% छात्रों ने इसमें भाग नहीं लिया था। 51% छात्रों ने हवामहल- आनंदमय शनिवार कार्यक्रम की पहल में भाग लिया था, और 47% छात्रों ने इसमें भाग नहीं लिया था। यह पाया गया कि 72% छात्र यूट्यूब के माध्यम से करियर मार्गदर्शन के सभी लाइव सत्रों में शामिल हुए थे। (राजीव गांधी करियर पोर्टल) और 27% छात्र इसमें शामिल नहीं हुए थे।

यद्यपि, 11% छात्रों के पास स्मार्टफ़ोन नहीं है, इसलिए वे ऑनलाइन कक्षाओं में शामिल नहीं हो सकते, और 89% छात्रों के पास ऑनलाइन कक्षाओं के लिए स्मार्टफ़ोन है। मैंने बताया कि 72% छात्रों ने अपने साथियों/सहपाठियों के साथ अपनी शंकाओं पर चर्चा की थी, और 27% छात्रों ने इस पर चर्चा नहीं की थी। 89% छात्रों ने दर्ज किया कि उन्हें ऑनलाइन सीखने के दौरान नेटवर्क समस्याओं का सामना करना पड़ा, और 10% छात्रों को ऑनलाइन सीखने के दौरान नेटवर्क समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ा।

82% छात्रों ने यह भी पुष्टि की कि उनके पास ऑनलाइन सीखने के लिए पर्याप्त मोबाइल डेटा नहीं था, जबकि 17% छात्रों ने बताया कि उनके पास इसके लिए पर्याप्त मोबाइल डेटा था। इसके अलावा, 58% छात्रों ने कहा कि उनके शिक्षक उनकी शंकाओं के बारे में पूछने पर भी तुरंत जवाब नहीं दे रहे थे, लेकिन 40% छात्रों ने बताया कि उनके शिक्षक उनके किसी भी संदेह के बारे में पूछने पर तुरंत जवाब दे रहे थे। यह महत्वपूर्ण है कि 78% छात्रों ने स्वीकार किया कि उन्हें लिंक के माध्यम से प्रदान की गई सामग्री में जटिल भाषा संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ा, लेकिन 20% छात्रों को ऐसी किसी भी समस्या का सामना नहीं करना पड़ा।

हालाँकि, 79% छात्रों ने अन्य ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म का इस्तेमाल किया जो मुफ़्त में उपलब्ध थे, और 21% छात्रों ने उनका इस्तेमाल नहीं किया। इसी कर्म में 95% छात्रों का मानना है कि आमने-सामने की पढ़ाई ऑनलाइन पढ़ाई से बेहतर है, जबकि केवल 4% छात्र इससे इनकार करते हैं। 95% छात्रों ने स्पष्ट रूप से कहा कि ऑनलाइन कक्षाओं के दौरान बातचीत की कमी है, लेकिन 5% छात्र इससे सहमत नहीं थे।

अधिकांश छात्रों में से 93% ने पुष्टि की कि ऑफ़लाइन कक्षाएं ऑनलाइन कक्षाओं की तुलना में अधिक प्रभावी हैं, लेकिन 6% छात्रों ने इससे इनकार किया। अधिकांश छात्रों, 74%, का मानना था कि ई-लर्निंग उन्हें पारंपरिक कक्षाओं जैसा सीखने का अनुभव नहीं देता, जबकि केवल 24% छात्रों ने यह समझा कि ई-लर्निंग उन्हें पारंपरिक कक्षाओं जैसा ही सीखने का अनुभव देता है। बताया गया है कि 92% छात्रों को SMILE कार्यक्रम के तहत उनके शिक्षकों द्वारा शुरू से ही व्हाट्सएप ग्रुप में जोड़ा गया था, और 7% छात्रों ने इससे इनकार किया।

और 84% छात्रों ने कहा कि उनके सभी सहपाठियों को SMILE WhatsApp ग्रुप में जोड़ा गया था, जबकि केवल 9% छात्र इससे सहमत नहीं थे।

छात्रों में से, 92% को SMILE WhatsApp ग्रुप के माध्यम से दैनिक लिंक मिले, और 6% इससे सहमत नहीं थे। 74% छात्रों ने माना कि उन्होंने अपने शिक्षक को अपनी शंकाओं के समाधान के लिए फ़ोन किया था, और 24% छात्र इससे सहमत नहीं थे। इसके बाद, 66% छात्रों ने कहा कि उनके शिक्षक ने दैनिक लिंक भेजने के अलावा ऑनलाइन कक्षाएँ भी ली थीं, लेकिन 32% ने इससे इनकार किया। केवल 13% छात्रों ने माना कि उन्हें इन कक्षाओं के माध्यम से कभी कोई गृहकार्य नहीं मिला, जबकि 85% छात्रों को इन कक्षाओं के माध्यम से गृहकार्य मिला।

अधिकांश छात्रों, 81% छात्रों ने बताया कि उनके होमवर्क की जाँच उनके शिक्षक द्वारा दैनिक/वैकल्पिक आधार पर की जाती थी, और 18% ने इससे इनकार किया। 75% छात्रों को होमवर्क के बारे में दैनिक आधार पर प्रतिक्रिया मिलती थी, और 24% छात्रों को इसके लिए प्रतिक्रिया नहीं मिली। अधिकांश छात्रों, 92% छात्रों ने अपने अध्ययन के लिए गूगल जैसे किसी अन्य स्रोत से मदद ली। हालाँकि 7% छात्रों को इससे मदद नहीं मिली है।

निष्कर्ष रूप में, राजस्थान बांसवाड़ा जिले में स्कूली शिक्षा में ई-लर्निंग पहलों के बारे में विभिन्न उत्तरदाताओं की धारणाओं के संबंध में, लगभग सभी उत्तरदाता इस बात पर सहमत थे कि आमने-सामने की पढ़ाई ऑनलाइन पढ़ाई से बेहतर और अच्छी है। उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि ऑनलाइन कक्षाओं के दौरान बातचीत की कमी

© 2026 अशोक कुमार सागर. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

होती है जिससे शिक्षक-छात्र के बीच निरंतर संवाद सम्भव नहीं होता है और आमने-सामने की पढ़ाई जैसा अनुभव देना संभव नहीं है। ई-लर्निंग में कई मुद्दे और चुनौतियाँ थीं, जैसे कनेक्टिविटी की समस्याएँ, नेटवर्किंग की समस्याएँ, जो सीखने के स्वाभाविक प्रवाह में बाधा डालती हैं और इंटरनेट डेटा का सीमित उपयोग। इन सीमाओं के बावजूद, उन्होंने कहा कि महामारी के दौरान पढ़ाई जारी रखने में ई-लर्निंग बहुत उपयोगी है क्योंकि यह समय बचाता है और छात्रों को अपनी शिक्षा जारी रखने में मदद करता है।

तालिका-3: स्कूल शिक्षा विभाग के कार्यक्रमों का शैक्षिक अधिगम पर प्रभाव

क्र. सं.	कथन	जेंडर	हाँ (%)	नहीं (%)	पता नहीं (%)
1.	ऑनलाइन/ऑफलाइन कार्यक्रमों ने मेरी पढ़ाई में निरंतरता बनाए रखी।	छात्र	86	12	2.0
		छात्रा	88.5	10	1.5
2.	Smile Program और अन्य पहल से मेरी पढ़ाई की रुचि बढ़ी।	छात्र	91	8.5	0.5
		छात्रा	89	9.0	2.0
3.	कोविड-19 के दौरान अध्ययन का वातावरण घर पर सकारात्मक रहा।	छात्र	86	12.5	1.5
		छात्रा	84	14	2.0
4.	महामारी के दौरान शिक्षकों का पर्याप्त सहयोग रहा।	छात्र	81	17.5	1.5
		छात्रा	82.5	16	1.5
5.	सहपाठियों के साथ संवाद की कमी से अधिगम प्रभावित हुआ।	छात्र	86	12	2.0
		छात्रा	88.5	9.0	2.5
6.	तकनीकी समस्याओं (नेटवर्क/बिजली) ने पढ़ाई में कठिनाई उत्पन्न की।	छात्र	76.5	20.5	3.0
		छात्रा	78	18.0	4.0
7.	ऑनलाइन कक्षाओं में शिक्षक का पढ़ाने का तरीका समझने में आसान था।	छात्र	88	10.5	1.5
		छात्रा	87	11.5	1.5
8.	अध्ययन सामग्री (वीडियो/पीडीएफ/वर्कशीट) समय पर और पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध कराई गई।	छात्र	85	13.5	1.5
		छात्रा	86.5	12.5	1.0
9.	घर पर पढ़ाई करते समय एकाग्रता बनाए रखना कठिन रहा।	छात्र	92	6.5	1.5
		छात्रा	93.5	5.5	1.0
10.	ऑनलाइन कक्षा के दौरान प्रश्न पूछने और उत्तर पाने की पर्याप्त सुविधा थी।	छात्र	89.5	8.5	2.0
		छात्रा	87	10.5	2.5
11.	परिवार के सहयोग से अधिगम वातावरण बेहतर हुआ।	छात्र	92.5	5.5	2.0
		छात्रा	93	6.0	1.0
12.	घर के अन्य कार्यों/जिम्मेदारियों के कारण पढ़ाई प्रभावित हुई।	छात्र	90	8.5	1.5
		छात्रा	87	11.5	1.5
13.	ऑनलाइन शिक्षा ने मुझे आत्मनिर्भर होकर पढ़ाई करने की आदत डाली।	छात्र	88	10.5	1.5
		छात्रा	87.5	11	1.5
14.	विद्यालय द्वारा संचालित रेडियो/टीवी कार्यक्रमों ने मेरी सीखने की प्रक्रिया को मजबूत किया।	छात्र	86	11.5	2.5
		छात्रा	85.5	13	1.5
15.	मुझे लगता है कि कोविड-19 के शैक्षिक कार्यक्रम भविष्य में भी उपयोगी हो सकते हैं।	छात्र	87	10.5	2.5
		छात्रा	86.5	11.5	2.0
16.	घर पर पढ़ाई करते समय आवश्यक शांति और अध्ययन का माहौल बना पाना मुश्किल था।	छात्र	77	21	2.0
		छात्रा	75.5	23	1.5
17.	सहपाठियों के साथ सामूहिक अध्ययन की कमी से अधिगम में रुकावट आई।	छात्र	91	8.0	1.0
		छात्रा	92	7.0	1.0
18.	विद्यालय ने समय-समय पर विद्यार्थियों और अभिभावकों से संवाद बनाए रखा।	छात्र	86	12.5	1.5
		छात्रा	85	13.5	1.5
19.	ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म (WhatsApp, Zoom, Google Meet) के प्रयोग में मुझे कठिनाई हुई।	छात्र	86	12	2.0
		छात्रा	85	11.5	3.5
20.	मुझे लगता है कि ऑनलाइन शिक्षा में मूल्यांकन निष्पक्ष और प्रभावी रहा।	छात्र	88	10	2.0
		छात्रा	89	9.5	1.5
21.	कोविड-19 के दौरान शिक्षा के डिजिटल साधनों के प्रयोग ने मुझे तकनीकी रूप से दक्ष बनाया।	छात्र	92.5	6.5	1.0
		छात्रा	93	5.5	1.5

स्रोत: शोध सर्वे

तालिका से पता चलता है कि 86% छात्र और 88.5% छात्राओं ने माना कि ऑनलाइन/ऑफलाइन कार्यक्रमों ने उनकी पढ़ाई की निरंतरता बनाए रखी। इसी प्रकार Smile Program और अन्य पहल से 91% छात्रों तथा 89% छात्राओं की अध्ययन रुचि बढ़ी। यह तथ्य स्पष्ट करता है कि शिक्षा विभाग के प्रयास विद्यार्थियों के लिए कारगर रहे। महामारी के समय जब विद्यालय बंद थे, तब ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म, व्हाट्सऐप ग्रुप, रेडियो एवं टीवी कार्यक्रम जैसे विकल्पों ने छात्रों को शिक्षा से जोड़े रखा।

© 2026 अशोक कुमार सागर. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

86% छात्र और 84% छात्राओं ने माना कि घर का अध्ययन वातावरण सकारात्मक रहा। यद्यपि ग्रामीण और आदिवासी अंचल में पढ़ाई का माहौल बनाए रखना कठिन था, फिर भी अभिभावकों के सहयोग ने वातावरण को अनुकूल बनाया। 92.5% छात्र और 93% छात्राओं ने पारिवारिक सहयोग को अधिगम वातावरण के लिए महत्वपूर्ण माना। इससे स्पष्ट है कि महामारी काल में शिक्षा की निरंतरता में परिवार की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण रही।

81% छात्रों और 82.5% छात्राओं ने माना कि इस महामारी के दौरान शिक्षकों का सहयोग पर्याप्त रहा। इसके अतिरिक्त 86% छात्रों और 85% छात्राओं ने कहा कि विद्यालय ने समय-समय पर विद्यार्थियों व अभिभावकों से संवाद बनाए रखा। इसका अर्थ है कि शिक्षक केवल औपचारिक रूप से नहीं, बल्कि सक्रिय भागीदारी के साथ विद्यार्थियों से जुड़े रहे। ऑनलाइन कक्षाओं में प्रश्न पूछने और उत्तर पाने की सुविधा भी लगभग 90% विद्यार्थियों द्वारा अनुभव की गई।

महामारी के दौरान सबसे बड़ी चुनौती तकनीकी संसाधनों की कमी रही। लगभग 76.5% छात्र और 78% छात्राओं ने स्वीकार किया कि नेटवर्क या बिजली की समस्या ने उनकी पढ़ाई में बाधा डाली। साथ ही, 86% छात्रों और 85% छात्राओं ने यह भी माना कि ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म (व्हाट्सऐप, गूगल मीट, जूम) का प्रयोग करने में कठिनाई हुई। यह स्थिति स्पष्ट करती है कि डिजिटल शिक्षा को प्रभावी बनाने के लिए तकनीकी ढाँचे को सुदृढ़ करना आवश्यक है।

घर पर अध्ययन करते समय एकाग्रता बनाए रखना कठिन रहा, यह तथ्य 92% छात्रों और 93.5% छात्राओं ने माना। इसी तरह सहपाठियों के साथ सामूहिक अध्ययन की कमी को भी 91% छात्रों और 92% छात्राओं ने अधिगम की बाधा बताया। घर पर शांति और अध्ययन का वातावरण न मिलना भी एक बड़ी समस्या रही। इन आँकड़ों से स्पष्ट है कि ऑनलाइन शिक्षा ने विद्यार्थियों की एकाकीपन की समस्या को बढ़ाया और समूहगत अधिगम की प्रक्रिया को कमजोर किया।

महामारी का एक सकारात्मक पहलू यह भी रहा कि छात्रों ने आत्मनिर्भर होकर अध्ययन करने की आदत विकसित की। लगभग 88% छात्र और 87.5% छात्राओं ने इसे स्वीकार किया। साथ ही, डिजिटल साधनों के प्रयोग ने 92.5% छात्रों और 93% छात्राओं को तकनीकी रूप से दक्ष बनाया। यह शिक्षा के भविष्य के लिए एक स्थायी उपलब्धि कही जा सकती है क्योंकि डिजिटल शिक्षा की आवश्यकता आने वाले समय में और भी बढ़ने वाली है।

अध्ययन सामग्री की उपलब्धता को 85% छात्र और 86.5% छात्राओं ने पर्याप्त माना। साथ ही, रेडियो/टीवी कार्यक्रमों को भी लगभग 86% छात्रों और 85.5% छात्राओं ने लाभकारी बताया। यह दर्शाता है कि शिक्षा विभाग ने बहुआयामी माध्यमों का उपयोग कर विद्यार्थियों तक सामग्री पहुँचाने का प्रयास किया। मूल्यांकन की निष्पक्षता और प्रभावशीलता के संदर्भ में भी लगभग 88-89% विद्यार्थियों ने संतोषजनक उत्तर दिए।

90% छात्र और 87% छात्राओं ने माना कि घर के अन्य कार्यों व जिम्मेदारियों के कारण उनकी पढ़ाई प्रभावित हुई। यह विशेषकर ग्रामीण व आदिवासी परिवेश की वास्तविकता है जहाँ विद्यार्थी अक्सर घरेलू व कृषि संबंधी कार्यों में भी लगे रहते हैं। महामारी ने इस जिम्मेदारी को और बढ़ा दिया, जिससे उनकी पढ़ाई पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा।

भविष्य की उपयोगिता और संभावनाओं के संदर्भ में 87% छात्र और 86.5% छात्राओं का मानना है कि कोविड-19 काल में चलाए गए शैक्षिक कार्यक्रम भविष्य में भी उपयोगी हो सकते हैं। इसका अर्थ है कि विद्यार्थियों ने ऑनलाइन शिक्षा, रेडियो-टीवी कार्यक्रम, व्हाट्सऐप आधारित अधिगम और डिजिटल संसाधनों के महत्व को स्वीकार किया है। यह अनुभव भविष्य में मिश्रित शिक्षा मॉडल के लिए आधार तैयार करता है।

तालिका-4: शिक्षा विभाग के कार्यक्रमों का शैक्षिक रूचि पर प्रभाव

क्र. सं.	कथन	जेंडर	हाँ (%)	नहीं (%)	पता नहीं (%)
1.	कोविड-19 के दौरान ऑनलाइन/ऑफ़लाइन कार्यक्रमों ने मेरी पढ़ाई में रुचि बनाए रखी।	छात्र	87.5	10.5	2.0
		छात्रा	86	11.5	2.5
2.	Smile Program ने मुझे पढ़ाई की ओर प्रेरित किया।	छात्र	85.5	10	4.5
		छात्रा	84	11.5	4.5
3.	डिजिटल माध्यम (मोबाइल/इंटरनेट) से पढ़ाई करना मुझे रोचक लगा।	छात्र	86	11	3.0
		छात्रा	84	12.5	3.5
4.	टीवी/रेडियो के माध्यम से प्रसारित कार्यक्रमों ने मेरी पढ़ाई में दिलचस्पी बढ़ाई।	छात्र	87	10.5	2.5
		छात्रा	87.5	11	1.5
5.	होम असाइनमेंट/वर्कशीट से पढ़ाई करने की रुचि बनी रही।	छात्र	76	21	3.0
		छात्रा	78	19	3.0
6.	शिक्षकों के ऑनलाइन मार्गदर्शन से पढ़ाई में उत्साह बढ़ा।	छात्र	81	17.5	1.5
		छात्रा	83	14.5	2.5
7.	कोविड-19 के दौरान नई तकनीक (ऐप्स, गूगल मीट आदि) से पढ़ना मुझे आकर्षक लगा।	छात्र	80	17	3.0
		छात्रा	82	15.5	2.5
8.	ऑनलाइन पढ़ाई के कारण आत्म-अध्ययन की रुचि में वृद्धि हुई।	छात्र	78	19	3.0
		छात्रा	80	18	2.0
9.	महामारी काल में पढ़ाई के प्रति गंभीरता पहले की तुलना में बढ़ी।	छात्र	74	23	3.0
		छात्रा	72	24	4.0
10.	कोविड-19 के शैक्षिक कार्यक्रमों से मुझे भविष्य की पढ़ाई/परीक्षाओं की तैयारी में रुचि बनी रही।	छात्र	77	20	3.0
		छात्रा	75	21	4.0
11.	महामारी के कारण मित्रों और शिक्षकों से दूर रहने के बावजूद पढ़ाई के प्रति रुचि कम नहीं	छात्र	78	19	3.0

© 2026 अशोक कुमार सागर. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

	हुई।	छात्रा	76	20	4.0
12.	कोविड-19 के दौरान पढ़ाई को लेकर मेरी नियमितता और अनुशासन बढ़ा।	छात्र	78	21	1.0
		छात्रा	76	21.5	2.5
13.	ऑनलाइन पढ़ाई ने मुझे विषयों को नए दृष्टिकोण से समझने में मदद की।	छात्र	79	19	2.0
		छात्रा	77	20	3.0
14.	डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म के प्रयोग ने मुझे पढ़ाई में और अधिक सक्रिय बनाया।	छात्र	75	21	4.0
		छात्रा	77	20	3.0
15.	ऑनलाइन क्विज़, असाइनमेंट और टेस्ट ने पढ़ाई को रुचिकर बनाया।	छात्र	81	17.5	1.5
		छात्रा	79	16	5.0
16.	महामारी काल में शिक्षक द्वारा दी गई व्यक्तिगत प्रतिक्रिया ने मेरी रुचि को बढ़ाया।	छात्र	81	16.5	2.5
		छात्रा	83	15	2.0
17.	घर से पढ़ाई करने पर भी मैंने अध्ययन में आनंद महसूस किया।	छात्र	79	18	3.0
		छात्रा	77	20.5	2.5
18.	ऑनलाइन शिक्षा ने मुझे नए विषयों/संसाधनों को खोजने की आदत डाली।	छात्र	80	17	3.0
		छात्रा	82	16	2.0
19.	महामारी के दौरान पढ़ाई की पद्धति ने मुझे आगे भी तकनीकी साधनों से पढ़ने के लिए प्रेरित किया।	छात्र	84	13	3.0
		छात्रा	85.5	12.5	2
20.	कोविड-19 कालीन शिक्षा ने मुझे भविष्य की करियर योजनाओं के प्रति और अधिक गंभीर बनाया।	छात्र	85	12	3
		छात्रा	83	12	5

स्रोतः शोध सर्वे

उपरोक्त तालिका-4 के प्रथम कथन से स्पष्ट होता है कि 87.5% छात्रों और 86% छात्राओं ने माना कि कोविड-19 काल में ऑनलाइन/ऑफ़लाइन कार्यक्रमों ने उनकी पढ़ाई में रुचि बनाए रखी। स्माईल कार्यक्रम (Smile Program) राजस्थान सरकार के शिक्षा विभाग की सबसे चर्चित पहल थी। 85.5% छात्र और 84% छात्राओं ने इसे प्रेरणादायी माना। यह कार्यक्रम डिजिटल माध्यमों (व्हाट्सऐप, गूगल लिंक, वीडियो लेक्चर) पर आधारित था, जिसने विद्यार्थियों में आत्मविश्वास और पढ़ाई की ललक बनाए रखी। मोबाइल और इंटरनेट के माध्यम से पढ़ाई करना 86% छात्रों और 84% छात्राओं को रोचक लगा। महामारी ने विद्यार्थियों को डिजिटल शिक्षा के महत्व का अनुभव कराया। यद्यपि तकनीकी दिक्कतें भी आईं, फिर भी अधिकांश छात्रों ने इसे सकारात्मक दृष्टि से लिया। साथ ही, नई तकनीक जैसे गूगल मीट, ऑनलाइन ऐप्स और ई-लर्निंग प्लेटफ़ॉर्म को 80% छात्र और 82% छात्राओं ने आकर्षक माना। यह बताता है कि नई पीढ़ी तकनीकी नवाचार को उत्साहपूर्वक अपनाने के लिए तैयार है।

इंटरनेट की कमी वाले क्षेत्रों में टीवी और रेडियो शिक्षा का प्रमुख साधन बने। 87% छात्र और 87.5% छात्राओं ने माना कि इन कार्यक्रमों ने उनकी पढ़ाई में दिलचस्पी बढ़ाई। 76% छात्र और 78% छात्राओं ने माना कि इनसे उनकी रुचि बनी रही। यद्यपि इस माध्यम में सीमाएँ भी थीं, क्योंकि लगभग 20% विद्यार्थियों को इसमें कठिनाई हुई, फिर भी अधिकांश के लिए यह रुचिकर और उपयोगी साबित हुआ। शिक्षक किसी भी शिक्षा प्रक्रिया की आत्मा होते हैं। ऑनलाइन मार्गदर्शन को 81% छात्र और 83% छात्राओं ने उत्साहवर्धक माना। साथ ही, व्यक्तिगत प्रतिक्रिया ने भी लगभग इतने ही प्रतिशत विद्यार्थियों को प्रेरित किया। महामारी काल ने विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर बनाया। 78% छात्र और 80% छात्राओं ने माना कि ऑनलाइन पढ़ाई ने आत्म-अध्ययन की आदत डाली। वहीं, 77-78% विद्यार्थियों ने कहा कि उनकी नियमितता और अनुशासन बढ़ा। इस तालिका के अनुसार, 74% छात्र और 72% छात्राएँ मानते हैं कि महामारी काल में उनकी पढ़ाई की गंभीरता पहले की तुलना में बढ़ी। हालांकि यह प्रतिशत अपेक्षाकृत कम है, परंतु यह भी एक महत्त्वपूर्ण संख्या है। इसके अतिरिक्त 85% छात्र और 83% छात्राएँ कहते हैं कि कोविड-19 कालीन शिक्षा ने उन्हें भविष्य की करियर योजनाओं के प्रति अधिक गंभीर बनाया।

ऑनलाइन क्विज़, टेस्ट और असाइनमेंट को 81% छात्रों और 79% छात्राओं ने रुचिकर माना। यह गतिविधियाँ विद्यार्थियों को केवल निष्क्रिय रूप से सुनने-पढ़ने तक सीमित नहीं रखतीं, बल्कि उन्हें सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित करती हैं। इसी प्रकार, 80-82% विद्यार्थियों ने कहा कि ऑनलाइन शिक्षा ने उन्हें नए संसाधनों और विषयों की खोज करने की आदत डाली। इससे उनकी जिज्ञासा और सृजनात्मकता में वृद्धि हुई। महामारी काल में सामाजिक दूरी और विद्यालयों के बंद होने से विद्यार्थियों को सहपाठियों और शिक्षकों से दूरी का सामना करना पड़ा। फिर भी 78% छात्र और 76% छात्राओं ने कहा कि उनकी पढ़ाई की रुचि कम नहीं हुई। यह शिक्षा विभाग के कार्यक्रमों और शिक्षकों की सक्रियता का सकारात्मक परिणाम था।

लैंगिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो लड़के और लड़कियाँ दोनों ही लगभग समान स्तर पर इन कार्यक्रमों से प्रभावित हुए। कुछ मामलों में लड़कियाँ जैसे– डिजिटल तकनीक अपनाने और आत्म-अध्ययन में थोड़ी आगे रहीं, जबकि लड़के करियर योजनाओं के प्रति अधिक गंभीर पाए गए। इससे स्पष्ट होता है कि महामारी ने दोनों ही वर्गों में शिक्षा के प्रति नई चेतना जगाई।

© 2026 अशोक कुमार सागर. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

तालिका-5: स्कूल शिक्षा विभाग के कार्यक्रमों का स्मृति स्तर पर प्रभाव स्मरण (Recall)

क्र. सं.	कथन	जेंडर	हाँ (%)	नहीं (%)	पता नहीं (%)
1.	ऑनलाइन कक्षा के बाद पढ़े गए विषय मुझे तुरंत याद हो जाते थे।	छात्र	76	20	4.0
		छात्रा	77.5	19.5	3.0
2.	स्माईल कार्यक्रम की वर्कशीट बार-बार हल करने से विषय याद हो गए।	छात्र	78	20	2.0
		छात्रा	80	17	3.0
3.	अध्याय का सारांश तैयार करना याददाश्त में सहायक रहा।	छात्र	82	16	2.0
		छात्रा	81	17	2.0
4.	टीवी/रेडियो कार्यक्रमों के उदाहरणों को मैं आज भी याद कर सकता हूँ।	छात्र	75	21	4.0
		छात्रा	73	24	3.0
5.	ऑनलाइन कक्षाओं के बाद शिक्षकों द्वारा कराए गए प्रश्नोत्तर से मेरी याददाश्त मजबूत हुई।	छात्र	76	20	4.0
		छात्रा	78	19	3.0
6.	मैं कोविड-19 के दौरान पढ़ाए गए नए शब्द/परिभाषाएँ बिना देखे याद कर पाता था।	छात्र	74	21	5.0
		छात्रा	72	24	6.0

स्रोतः शोध सर्वे

शिक्षा केवल ज्ञानार्जन की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह स्मृति और पुनःस्मरण (recall) की क्षमता पर भी आधारित होती है। किसी भी विद्यार्थी की शैक्षणिक सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि वह सीखे हुए विषयों को कितनी देर तक स्मृति में सुरक्षित रख पाता है और कितनी शीघ्रता से उसे पुनः याद कर सकता है। कोविड-19 महामारी के समय जब पारंपरिक शिक्षा-प्रणाली बाधित हुई, तब राजस्थान के शिक्षा विभाग ने Smile Program, ऑनलाइन कक्षाएँ, टीवी/रेडियो कार्यक्रम और वर्कशीट आधारित पद्धतियाँ लागू कीं। इन कार्यक्रमों का सीधा प्रभाव विद्यार्थियों के स्मृति स्तर पर भी पड़ा।
उपरोक्त तालिका के अनुसार 76% छात्र और 77.5% छात्राएँ मानते हैं कि ऑनलाइन कक्षा के बाद पढ़े गए विषय उन्हें तुरंत याद हो जाते थे। यह परिणाम दर्शाता है कि डिजिटल कक्षाओं के माध्यम से तत्काल स्मृति (short-term memory) पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा। 78% छात्र और 80% छात्राओं ने स्वीकार किया कि Smile Program की वर्कशीट को बार-बार हल करने से विषय स्मृति में स्थायी हो गए। सारांश (summary) बनाना स्मृति को सुदृढ़ करने का एक पारंपरिक और कारगर तरीका है। तालिका बताती है कि 82% छात्र और 81% छात्राओं ने अध्याय का सारांश तैयार करने को याददाश्त के लिए सहायक माना।
75% छात्र और 73% छात्राएँ कहते हैं कि टीवी/रेडियो कार्यक्रमों के उदाहरण उन्हें आज भी याद हैं। इसका अर्थ है कि ऑडियो-वीजुअल माध्यम स्मृति निर्माण में प्रभावी रहे। हालांकि, छात्राओं की तुलना में छात्रों का प्रतिशत अधिक है। 76% छात्र और 78% छात्राओं ने स्वीकार किया कि ऑनलाइन कक्षाओं के बाद शिक्षकों द्वारा कराए गए प्रश्नोत्तर से उनकी याददाश्त मजबूत हुई। तालिका के अनुसार 74% छात्र और 72% छात्राएँ कहते हैं कि वे बिना देखे नए शब्द याद कर लेते थे। यहाँ छात्राओं का प्रतिशत अपेक्षाकृत कम है (72%), जो यह दर्शाता है कि स्मरण के इस स्तर पर लड़कियों को थोड़ी अधिक कठिनाई का अनुभव हुआ। यदि सभी बिंदुओं को देखा जाए तो छात्रों और छात्राओं की प्रतिक्रियाएँ लगभग समान हैं। कुछ बिंदुओं पर छात्राएँ आगे रहीं (जैसे – वर्कशीट का प्रभाव, प्रश्नोत्तर से स्मृति), तो कुछ बिंदुओं पर छात्र अधिक सकारात्मक पाए गए (जैसे – टीवी/रेडियो कार्यक्रमों के उदाहरण याद रखना)। यह संतुलन बताता है कि शिक्षा विभाग की पहल ने दोनों वर्गों को समान रूप से प्रभावित किया।

तालिका-6: स्कूल शिक्षा विभाग के कार्यक्रमों का पुनरुत्पादन पर प्रभाव

क्र. सं.	कथन	जेंडर	हाँ (%)	नहीं (%)	पता नहीं (%)
1.	परीक्षा/टेस्ट में कोविड-19 काल की पढ़ाई को मैं आसानी से लिख पाता था।	छात्र	76	21	3.0
		छात्रा	78	18.5	3.5
2.	ऑनलाइन कक्षाओं में सीखी गई अवधारणाओं को मित्रों को समझाने में सक्षम रहा।	छात्र	72	22	6.0
		छात्रा	74	21	4.0
3.	डिजिटल माध्यम (वीडियो/पीपीटी) ने विषयों को पुनः प्रस्तुत करने में आसानी दी।	छात्र	76	22	2.0
		छात्रा	73	23	4.0
4.	प्रश्न हल करते समय मैंने उदाहरण और सूत्र ठीक तरह से पुनः प्रस्तुत किए।	छात्र	71	26	3.0
		छात्रा	73	23	4.0
5.	वर्कशीट/असाइनमेंट ने लिखित उत्तर याद रखने में मदद की।	छात्र	76	21	3.0
		छात्रा	78	20	2.0

स्रोतः शोध सर्वे

पुनरुत्पादन, स्मृति स्तर का एक महत्त्वपूर्ण आयाम है। यह वह प्रक्रिया है जिसमें विद्यार्थी सीखी हुई सूचनाओं, अवधारणाओं और तथ्यों को परीक्षा, चर्चा या व्यवहारिक जीवन में पुनः प्रस्तुत करता है। ऊपर दी गई तालिका के अनुसार 76% छात्र और 78% छात्राओं ने स्वीकार

© 2026 अशोक कुमार सागर. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

किया कि कोविड-19 काल की पढ़ाई को वे परीक्षा/टेस्ट में आसानी से लिख पाते थे। केवल 21-22% विद्यार्थियों ने नकारात्मक अनुभव जताया, जो बताता है कि अधिकांश छात्रों ने शिक्षा विभाग के कार्यक्रमों को उपयोगी पाया। सीखने की सबसे बड़ी कसौटी यह है कि विद्यार्थी अपने अर्जित ज्ञान को दूसरों को समझा सके। इस दृष्टि से 72% छात्र और 74% छात्राएँ कहती हैं कि वे मित्रों को अवधारणाएँ समझाने में सक्षम रहे। हालाँकि लगभग 22% विद्यार्थियों ने कठिनाई जताई, जो तकनीकी दिक्कतों, आत्मविश्वास की कमी या संवादहीनता का परिणाम हो सकता है।

ऑनलाइन शिक्षा का सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू डिजिटल सामग्री (वीडियो, पीपीटी, ऑनलाइन लेक्चर) था। 76% छात्र और 73% छात्राएँ मानती हैं कि इन माध्यमों ने विषयों को पुनः प्रस्तुत करने में मदद की। हालाँकि, छात्राओं की तुलना में छात्रों का प्रतिशत अधिक है, जो यह दर्शाता है कि लड़के डिजिटल माध्यमों के उपयोग में अधिक सहज थे। प्रश्नों का समाधान करते समय विषय-वस्तु का पुनः स्मरण और पुनरुत्पादन आवश्यक है। इस संदर्भ में 71% छात्र और 73% छात्राएँ कहती हैं कि वे उदाहरण और सूत्र ठीक तरह से प्रस्तुत कर पाए। हालाँकि 23-26% विद्यार्थियों को इसमें कठिनाई रही है। वर्कशीट और असाइनमेंट कोविड-19 काल में शिक्षा का प्रमुख आधार बने। 76% छात्र और 78% छात्राओं ने माना कि इनसे लिखित उत्तर याद रखने में मदद मिली। यह तथ्य दर्शाता है कि बार-बार लिखने से विद्यार्थियों की पुनरुत्पादन क्षमता सुदृढ़ हुई। यह विधि पारंपरिक पठन-पाठन के साथ-साथ ऑनलाइन शिक्षा का भी महत्त्वपूर्ण सहारा बनी।

4. निष्कर्ष

इस प्रकार इस शोध से प्राप्त निष्कर्षों से स्पष्ट होता है कि राजस्थान सरकार के शिक्षा विभाग द्वारा संचालित स्माईल कार्यक्रम महामारी काल में सबसे प्रभावी शैक्षिक पहल सिद्ध हुआ जिसने विद्यार्थियों की रुचि, अधिगम वातावरण और स्मृति स्तर को समग्र रूप से सबसे अधिक प्रभावित किया। ऑनलाइन कक्षाएँ भी विद्यार्थियों के लिए सहायक रहीं, विशेषकर स्मृति और पुनरावृत्ति के लिए। टीवी/रेडियो कार्यक्रम और वर्कशीट्स ने सीमित प्रभाव डाला, किंतु ग्रामीण और संसाधनविहीन विद्यार्थियों के लिए ये उपयोगी सिद्ध हुए। विद्यार्थियों ने महामारी काल में आत्मनिर्भर अध्ययन की आदत विकसित की और डिजिटल संसाधनों से तकनीकी दक्षता अर्जित की। ध्यान की कमी, तकनीकी बाधाएँ और घरेलू वातावरण स्मृति और अधिगम की सबसे बड़ी चुनौतियाँ रहीं। परिवार और शिक्षकों का सहयोग विद्यार्थियों के लिए उपयोगी रहा। महामारी काल की शिक्षा ने भविष्य में ब्लेंडेड लर्निंग (मिश्रित शिक्षा) की संभावनाओं को मजबूत किया।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. इंटरनेशनल कमेटी ऑन टेक्सोनॉमी ऑफ वायरस. वायरस टेक्सोनॉमी 2018 बी रिलीज. आईसीटीवी; 2019 मार्च. अभिगमन तिथि: 2020 जनवरी. p.07.
2. शर्मा पुनीत कृष्ण, जैन सतीश कुमार. कोरोना महामारी का छात्रों की मनःस्थिति पर प्रभाव. रिसर्च रिइंफोर्स्मेंट. 2020;8(1):63-68.
3. UNESCO. यूनेस्को रिपोर्ट. 2020.
4. गोस्वामी पूजा, सिंह सुषमा. कोरोना वायरस महामारी का शिक्षा पर सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स. 2022;10(2):500-504.
5. राजगोपाल शोभित, गुप्ता मुक्ता. राजस्थान के सरकारी स्कूलों में डिजिटल अधिगम. अजीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी लर्निंग कर्व. 2021; अगस्त:98-101.
6. Shala Darpan. राजस्थान सरकार. 2020.
7. Department of Education Rajasthan. शिक्षा विभाग, राजस्थान सरकार. 2020.
8. Ministry of Education. शिक्षा विभाग, भारत सरकार. 2020.
9. शोध सर्वेक्षण द्वारा एकत्रित आंकड़े. 2023.

Creative Commons License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) License. This license permits users to copy and redistribute the material in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and the source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted.

About the Corresponding Author

अशोक कुमार सागर शिक्षा विभाग, Govind Guru Tribal University, बांसवाड़ा (राजस्थान) में शोधार्थी हैं। उनका शोध क्षेत्र शिक्षा, जनजातीय अध्ययन तथा समकालीन शैक्षिक चुनौतियों पर केंद्रित है। वे अकादमिक अनुसंधान एवं सामाजिक विकास से संबंधित विषयों में सक्रिय रुचि रखते हैं।

© 2026 अशोक कुमार सागर. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/